



“पाथेय”

तलेसरा विकास संस्थान

कार्यालय : 98, बड़ा बाजार, चौमुखा मन्दिर के पास, उदयपुर-313001 (राज.)

Web : www.talesara.org • email : tvssudaipur@gmail.com

अध्यक्षीय सम्बोधन

तलेसरा विकास संस्थान परिवार के सम्मानित सदस्यगण,

हमारे तलेसरा परिवार के लिए यह अत्यन्त गर्व का क्षण है, कि हम एक नई पहल की शुरुआत कर रहे हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य आपसी सहभाव को बढ़ावा देना है। उदयपुर में रहकर भी हम एक दूसरे को अच्छी तरह नहीं जानते हैं। इसलिए हमने महिला विंग के साथ मिलकर समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया है, जिससे हम सभी एक दूसरे के साथ जुड़ सकें।

हमारा उद्देश्य न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व में बसे तलेसरा परिवारों को जोड़ना है। इस दिशा में श्री प्रकाश जी तलेसरा 'वेबसाइट' बनाने का काम भी कर रहे हैं। इससे हमारा सम्पर्क और भी आसान

हो सकेगा। इसके साथ ही तलेसरा परिवारों के बीच आपसी व्यापार को बढ़ावा देना, कमजोर वर्ग की सेवा करना एवं विधायी बालकों को स्वेटर इत्यादि बाँटना भी हमारे उद्देश्यों में शामिल हैं।

साथ ही सतीमाताजी परिसर को और भी बेहतर बनाने के लिए हम सतत् प्रयासरत हैं।

तलेसरा विकास संस्थान के सभी सदस्यों एवं कार्यकारी के सदस्यों का सहयोग एवं बड़ों का आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहा है। आपके मन में जो भी नवीन विचार तथा योजनाएं हैं, उन्हें हम साकार करने का पूरा प्रयास करेंगे।



- महेन्द्र तलेसरा

सम्पादकीय

‘पाथेय’ का छठा अंक तलेसरा विकास संस्थान परिवार को सादर समर्पित है। इस अंक में यथासंभव परिवार की महत्वपूर्ण गतिविधियों, नवाचारों एवं आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई है। ‘पाथेय’ को अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव आमंत्रित हैं। साथ ही आप सभी से निवेदन है कि अपनी अधिक से अधिक रचनाएँ भेजकर इस प्रकाशन को अधिक ज्ञानात्मक एवं लाभदायक बनाएँ।

- सम्पादकगण

सचिव की कलम से...

प्रिय साथियों, तलेसरा विकास संस्थान की इस खूबसूरत यात्रा में हमने एक पवित्र रास्ता तय करके बहुत कुछ हासिल किया है। हमारी मेहनत और समर्पण ने हमें यहां तक पहुंचाया है, और यह सफर वाकई प्रेरणादायक रहा है। लेकिन, हमारी मंजिल अभी दूर है। हमें मिलकर और भी ऊंचाइयों को छूना है। हमारे सपनों को साकार करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए हमें एकजुट होकर आगे बढ़ना होगा।



सहयोग के बिना यह संभव नहीं हो सकता। हमें इस संघर्ष में एक-दूसरे के साथ जुड़े रहने का अत्यंत महत्व है। अच्छे और बुरे समय में एक-दूसरे का समर्थन और साथ देना हमारे लक्ष्य की ओर बढ़ने में हमारी मदद करेगा। हम सभी प्रयासों का समर्थन करें और इस यात्रा में अपना सहयोग देने के लिए एक-दूसरे को प्रेरित करें।
धन्यवाद।

- हेमेश तलेसरा

हमारी इस यात्रा में हर एक कदम महत्वपूर्ण है और आपके



श्री करेड़ा पार्श्वनाथ जी

तलेसरा विकास संस्थान कार्यकारिणी 2023-2025



श्री सतीमाता जी



श्री महेश तलेसरा
अध्यक्ष



श्री हेमेश तलेसरा
सचिव



श्री वैभव तलेसरा
कोषाध्यक्ष



श्रीमती निर्मला तलेसरा
उपाध्यक्ष



श्री लोकेश तलेसरा
संयुक्त सचिव



श्रीमती प्रियंका तलेसरा
जन सम्पर्क सचिव



श्री कुलदीपक तलेसरा
पूर्व अध्यक्ष



श्रीमती निर्मला तलेसरा
पूर्व सचिव



श्री सुशील तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्री पंकज तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्री रवि तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्री ऋषि तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्री पुनीत तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्री संजय तलेसरा
कार्य. सदस्य

जैन धर्म एवं मनोचिकित्सा

जैन धर्म हजारों सालों से अस्तित्व में है। 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने लगभग 2500 वर्ष पूर्व 23 तीर्थंकरों ने जैन धर्म का प्रचार किया था। भले ही वे जैन धर्म के संस्थापक नहीं थे, जो अनादिकाल से अस्तित्व में था, लेकिन इन्होंने अपनी असाधारण समझ और ज्ञान से जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। जैन धर्म के प्रचार प्रतिपादन और इसके सिद्धान्तों को प्रकाश में लाने का श्रेय इन्हीं को रहा। भगवान महावीर ने औपचारिक रूप दिया तथा पुनर्जीवित किया।

जैन धर्म के मनोचिकित्सा सम्बन्धी पहलू निम्नलिखित हैं -

1. आत्मनियन्त्रण

आत्मनियन्त्रण परिपक्व निर्माण में सहायक है। इससे इच्छाओं व भावनों पर नियन्त्रण होता है। उपवास, कम खाना और रोजाना एक या अधिक व्यंजनों का त्याग जैसी शारीरिक तपस्या से भूख और खाद पर नियन्त्रण होगा। 8-10 साल के बच्चों को भी उपवास का पालन करते देखा गया है। इससे बच्चों में परिपक्व व्यक्तित्व का विकास होगा। इच्छाओं और अपेक्षाओं के कारण मानसिक रूग्णता आती है। भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रखने से शरीर पर विपरित प्रभाव पड़ता है।

2. आत्म संयम

श्रावक कुछ मिनिट, कुछ घण्टे या पूरे दिन न बोलने का मौनव्रत रखते हैं, एक या कुछ घण्टे पश्चात् ही पानी पीने या कोई वस्तु खाने का व्रत रखते हैं। इससे आत्म संयम बढ़ता है।

3. आत्म निरीक्षण तथा एकाग्रता

जैन धर्म व्यक्ति के जुनून को नियन्त्रित रखने के साथ-साथ मानसिक एकाग्रता को प्रेरित करने के साधन के रूप में आत्मदमन के अभ्यास पर जोर देता है। एकान्त एवं पवित्र स्थान पर बैठ कर या खड़े होकर एकाग्र चित्त से तीर्थंकरों की स्तुति करते हैं। ध्यान के अभ्यास से शरीर, वाणी एवं मन पर पूर्ण संयम रहता है। सामायिक एवं प्रतिक्रमण द्वारा भी सभी निन्दनीय कार्यों एवं भावनाओं के सम्बन्ध में मन की सन्तुलित स्थिति बनी रहती है।

4. सद्गुणों का पालन :

क्षमा, विनम्रता, ईमानदारी तथा सच्चाई, पवित्रता, संयम, तप-त्याग, निःस्वार्थता एवं ब्रह्मचर्य से व्यक्ति में मानसिक रोगों से पीड़ित होने की संभावना कम रहती है। आत्म नियन्त्रण एवं आत्म संयम से न्यूरोसिस, व्यक्तित्व विकार, व्यसन जैसी मानसिक बीमारियों की रोकथाम एवं उपचार में मदद मिलती है।

जैन धर्म के सिद्धान्त न केवल मोक्ष के लिए उपयोगी है, वरन् ऐसे व्यक्ति के लिए भी उपयोगी है, जो अपने आन्तरिक संघर्षों और जटिलताओं से ऊपर उठाकर सुखी जीवन जीना चाहते हैं। “पर्यूषण” पर्व आत्म शुद्धि और आत्मनिरीक्षण का एक वार्षिक अनुष्ठान है, जिसमें व्यक्ति एक-दूसरे से क्षमा मांगते हैं और नकारात्मक भावनाओं को भूलकर सकारात्मक रिस्ता स्थापित करते हैं।

- प्राफेसर (डॉ.) हेमलता तलेसरा



पर्वाधिराज पर्यूषण महापर्व की शुभकामनाएँ

भगवान महावीर की प्रतिज्ञाएं और जीवन जीने के उपदेश

भगवान महावीर ने अपने उपदेशों के माध्यम से विश्व का मार्गदर्शन करते हुए निर्वाण प्राप्ति के कुछ खास तरीके बताये हैं। इन तरीकों को निम्न प्रतिज्ञाओं का पालन करना मुख्य है :-

1. जीवन को बचाने के लिए अहिंसा का पालन एवं दयाभाव।
2. सच बालेकर मृत्यु को आसानी से पार करना।
3. चोरी नहीं करने का संकल्प।
4. दुःख से छुटकारा पाने हेतु सजीव या निर्जीव चीजों का संग्रह नहीं करना।
5. ब्रह्मचर्य का पालन श्रेष्ठ तपस्या है, जो ज्ञान, दर्शन, चरित्र, संयम और विनय की जड़ है।
6. क्षमाशीलता : सभी जीवों के प्रति क्षमा भाव रखना। किसी से वेर नहीं रखकर अपने अपराधों के प्रति क्षमा करना।
7. धर्म, अहिंसा, संयम और तप का पालन : भगवान महावीर

का जन्म ऐसे युग में हुआ जब हिंसा, पशुबलि, जात-पात का भेदभाव बढ़ गया था। उन्होंने विश्व को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया।



साथ ही अनेकान्तवाद, स्यादवाद और अपरिग्रह जैसे अद्भुत सिद्धान्त दिये। जियो और जीने दो, दूसरों के साथ वह व्यवहार कभी मत करो, जो स्वयं को अच्छा न लगे, दूसरों के दुर्गुणों को न देखकर उसके सद्गुणों को ग्रहण करो, कमजोरों की सेवा करो आदि ऐसे उपदेश हैं, जिनके माध्यम से उपरोक्त प्रतिज्ञाओं का पालन करके निर्वाण प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन दिया है। ये सभी प्रतिज्ञाएं वर्तमान में अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यदि विश्व को तबाही से बचाना है, कल्याण के मार्ग पर चलना है तो भगवान महावीर के बाये हुए रास्ते पर ही चलना होगा।

- (डॉ.) अनिता तलेसरा

आत्म मंथन

सुख-दुःख जिंदगी का अहम हिस्सा है। दुःख के बिना सुख का आनंद नहीं लिया जा सकता है। जिंदगी के सुखद क्षण निरंतर बने रहने पर उस सुख की महत्ता व आनंद समाप्त हो जाता है। गर्मी से बचने के सभी साधनों का उपयोग करते रहने पर इस सुख का एहसास नहीं होता है। जब 10:00 बजे से 5:00 बजे से तक बिजली बंद रहती है और 5:00 बजे बिजली आती है तब इन साधनों की महत्ता का एहसास होता है।

कोई नहीं चाहता है की जिंदगी में दुःख या बाधा सताए पर दुःख है कि हर जिंदगी में घुसपैठ कर ही लेता है। कुछ बाधाएँ या दुःख ऐसे होते हैं जो मनुष्य के वश में नहीं होते हैं पर अधिकांश दुःखों को या बाधाओं को टाला जा सकता है। इन बातों को तभी टाला जा सकता है जब बाधाओं के कारणों पर मंथन किया जाए।

प्रतिदिन स्व-अवलोकन अथवा स्व-मंथन हेतु कुछ क्षण निकालें तो निश्चित ही हमारे व्यक्तित्व में परिवर्तन दृष्टिगत होता है। साथ ही दुःख के कारणों का निवारण भी। किसी व्यक्ति से बहस हो जाती है, मूड खराब हो जाता है, अक्सर सारा दोष विपक्ष पर डाल देते हैं। जब दिमाग शांत हो जाए तब पूरे घटनाक्रम का विश्लेषण करें तो अधिकांशतः हमारी टोन, हाव-भाव, शब्द, शारीरिक भाषा तथा विपक्ष की बात को नकारने

की मानसिकता बहस का कारण बनती है। आत्म मंथन द्वारा हम अपने से साक्षात्कार करें, स्वयं से पूछें क्या बहस टाली जा सकती थी, क्या बहस से मानसिक शांति प्राप्त हुई, क्या बहस से रिश्तों में दूरियां नहीं आई, क्या हम भी गलत नहीं थे, क्या ऐसी जीत हमें संतोष प्रदान करती है। इस तरह के मंथन प्रतिदिन करने से अशांति कम होती चली जाती है, मन में शांति बढ़ती है।



स्व-मंथन अपनी दिनचर्या के लिए भी किया जाना चाहिए। रात्रि में सोने के पूर्व दिन भर के क्रियाकलाप का स्व-मंथन अपनी दिनचर्या के लिए भी किया जाना चाहिए। रात्रि में सोने के पूर्व दिन भर के क्रियाकलाप का मंथन करने पर कई बार हम अपना अमूल्य समय कहीं बर्बाद कर देते हैं। क्या दिन भर में किसी से दो शब्द मीठे बोले हैं, क्या किसी के लिए कोई परोपकारी कार्य किया, समय का सदुपयोग किस कार्य में किया? कई बार ऐसा भी होता है जब रात में हमसे कोई पूछे कि आज दिन भर क्या किया इसका जवाब देना बेहद कठिन हो जाता है।

एक बार 10 दिन तक 'स्व-मंथन' प्रयोग करके देखें। 24 घंटे में से 5 मिनट स्व-मंथन के लिए निकालें, परिवर्तन स्वयं देखें। स्व-विकास व शांति की ओर कदम बढ़ाए।

- डॉ. सुषमा तलेसरा

50 पार, आपके विचार

उम्र का दो तिहाई हिस्सा जी चुके लगभग अगला जन्म निश्चित हो चुका है। शुभ गति मतलब मनुष्य में पुन जन्म, तब स्वयं से संतुष्ट तो रहते ही होंगे। यदि देव गति तो भगवान को याद करने और सबकी निस्वार्थ भलाई में खूब मन लगता होगा।



अशुभ गति में जन्म निश्चित हुआ मतलब तिर्यच गति है तो खूब मायाचारी, कभी किसी को सच तो कुछ बताना ही नहीं रुक पट ही कपट। यदि नरक गति तब हुई तो रात दिन हडपने के विचार, बस एक ही जिद की सबसे ज्यादा अपना हो जाये, लोग इर्ष्या से भरे तो ही आनन्द आये।

जैसी गति वैसी मति कहो या जैसी मति वैसी गति कहो बात एक ही है। अब मस्तिष्क में वैसे ही विचार उत्पन्न होंगे जैसा अगला जन्म तब हो चुका है। उपर से अपने को ही सही साबित करने की जिद, जून। कोई बिरले ही होंगे जो यथार्थ ज्ञान की खोज में आगे बढ़ेंगे। अपने पिछले जन्मों में किये हुए तप के फल से ज्ञात साधनों को सही दिशा में लगा पायेंगे। या गति का बन्ध होने के पश्चात भी उसमें और विकास करने का मार्ग वाला पुरुषार्थ नहीं छोड़ेंगे। बाकि तो जो है सो है।

संकलन- दीप शिखा जैन



श्री करेड़ा पार्श्वनाथ जी

तलेसरा विकास संस्थान महिला कार्यकारिणी 2023-2025



श्री सतीमाता जी



श्रीमति शीला तलेसरा
अध्यक्ष



श्रीमति साधना तलेसरा
सचिव



श्रीमति अंकिता तलेसरा
कोषाध्यक्ष



श्रीमती आजाद तलेसरा
उपाध्यक्ष



श्रीमति प्रतिभा तलेसरा
संयुक्त सचिव



डॉ. श्रीमती अनिता तलेसरा
जन सम्पर्क सचिव



श्रीमती शोभा तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्रीमती माधुरी तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्रीमती चित्रलेखा तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्रीमती नेहा तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्रीमती डिम्पल तलेसरा
कार्य. सदस्य



श्रीमती संगीता तलेसरा
जन सम्पर्क सचिव

एक बार राजा श्रेणिक भगवान महावीर का धर्म उपदेश श्रवण करने गये। उपदेश सुनने के पश्चात् राजा ने अपने परभव के बारे में भगवान महावीर से पूछा कि मैं कहाँ जाऊंगा सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान ने बताया, कि तुम यहां से मर कर नरक में उत्पन्न होओगे ! तुमने अच्छे कार्य भी किये हैं परन्तु इससे पूर्व ही तुम्हारा नरक आयुष्य बंध चुका है, अच्छे कार्यों के परिणाम स्वरूप तुम आने वाली चौबीसी में पद्मनाम नाम के प्रथम तीर्थकर बनोगे।

राजा ने नम्रता पूर्वक विनती की कि भगवान ऐसा कोई उपाय है जिससे मैं नरकगमन से बच जाऊं ? भगवान ने कहा कि तुम चार कार्यों में से एक भी कार्य कर सको तो तुम्हारा नरक गमन रुक सकता है।

1. कपिला दासी से दान दिलाना
2. नवकारसी पच्चक्खाण का पालन करना
3. कालसौरिक कसाई से पशुवध बन्द कराना
4. पुर्णिया श्रावक की सामायिक, मोल लेना।

उक्त तीनों बातों में असफल होने पर राजा श्रेणिक पूर्णिया श्रावक के घर गये। पूर्णिया श्रावक भ.महावीर के परम भक्त, परम सतुष्ट और अति अल्पगृही थे। रहने का साफ सुथरा सादा मकान। वे प्रतिदिन बारह आने की रुई की पुनिया लाते, कातते और सूत बेचकर जो पारिश्रमिक मिलता उससे अपना कुटुम्ब का भरण पोषण करते थे। सदा धर्म चिन्तन में लीन रहते। सदा संतोषी और सादा जीवन व्यतीत करते थे। वे सूत कातने से बचे समय में सामायिक किया करते थे। सामायिक यानि प्राणी मात्र में आत्मानुभूति।

अचानक राजा को अपने घर देख पूर्णिया प्रसन्न हुआ। प्रसन्नता के साथ उसके मन में भय भी था। पुर्णिया कोई इतना बड़ा आदमी नहीं था कि राजा उसके घर आये। उसने राजा से कहा राजन मैं

आपकी क्या सेवा करूं ? श्रेणिक ने कहा -एक साधारण सी बात है। भगवान ने मेरे नरकगमन रुकने के चार उपाय बताये उनमें से तीन से मैं परास्त हो चुका हूँ। अब अन्तिम आपका ही सहारा है मुझे एक सामायिक मोल दे दीजिए। जिससे मेरा नरक गमन रुक जाओ एकदम नई बात सुन - पुर्णिया श्रावक सोचने लगा तो श्रेणिक ने कहाँ आप चिंता न करे। मैं आपकी सामायिक मुफ्त में नहीं लूंगा उसके लिये जितना पैसा चाहे ले लो। पूर्णिया बोला- मेरे पास जो कुछ है वह आपका ही है। मैं आपके किसी काम आ सकूँ इससे बढ़कर मेरा क्या सौभाग्य होगा। श्रेणिक सामायिक लेने को तैयार व पुर्णिया देने को तैयार किन्तु उसके मूल्य को लेकर समस्या खड़ी हो गई, आखिर दोनों भगवान के पास पहुंचे। श्रेणिक ने भगवान से सामायिक का मूल्य पूछा।

भगवान ने बताया राजन तुम्हारा सारा राज्य और स्वर्ण की सर्वराशि और तुम्हारे पास जितनी भी सम्पत्ती है वह सब एक सामायिक की दलाली के लिये भी पर्याप्त नहीं है। जब दलाली भी पूरी नहीं बनती तो मूल्य की बात बहुत दूर है। उसी प्रकार पूर्णिया श्रावक की सामायिक अमूल्य है। उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती। सामायिक आत्मा की शुद्ध अनुभूति है जिसका मुल्यांकन भौतिक सम्पत्ति के साथ नहीं किया जा सकता।

राजा को यह बात समझ में आ गई कि सामायिक की धर्मक्रिया खरीदी नहीं जा सकती। धन्य है पुर्णिया श्रावक जो पवित्र निर्मल और अति संतुष्ट जीवन जी रहे हैं वे कितने अल्प परिग्रह धारी है फिर भी परमसुखी हैं।

सार- भगवान समझाते हैं कि सुख परिग्रह में नहीं है परन्तु इच्छाओं को कम करने में है।

संकलन - निर्मला तलेसरा



नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा भारत के युवाओं को जिम्मेदार इन्सान बनाने का कदम

वर्तमान में हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था में हो रहे नवीन प्रयासों की ओर जानकारी होना अत्यावश्यक है। नई शिक्षा नीति जिसे 29 जुलाई 2020 को मंजूरी देकर राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया गया, शिक्षा के हर स्तर पर गुणवत्ता लाने का महत्वपूर्ण प्रयास हैं। हमारे देश की परम्पराओं एवं मूल्यों को ध्यान में रखते हुए विश्व स्तरीय कौशल युक्त भावी पीढ़ी तैयार करने का इस शिक्षा नीति का महत्वपूर्ण लक्ष्य होगा। इसके तहत 2 साल की पूर्व प्राथमिक शिक्षा को आनन्दमय भरे माहोल में बनाने के लिए प्रयास किये जायेंगे। देश में विद्यालयी पढ़ाई से लेकर उच्च शिक्षा पर भी बल दिया गया है। इसके तहत आजीवन सीखने की प्रक्रिया को जारी रखना और समय के साथ तैयार किया जाएगा।

नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा छात्रों को विश्व स्तरीय उच्च स्तरीय, गुणवत्तायुक्त, संज्ञानात्मक क्षमताओं, समस्या समाधान, दृष्टिकोण पर आधारित समग्र शिक्षा से देश के युवाओं को जिम्मेदार इन्सान बनाया जाएगा। देश के युवाओं में अच्छे चरित्र मूल्यों, मानवीय नैतिकता, दूसरों के लिए सम्मान और समानता की भावना विकसित करने का प्रयास होगा। छोटे बच्चों को मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा। छठी कक्षा से व्यावसायिक शिक्षा को जोड़ा जाएगा, जो विद्यार्थियों को अपने व्यवसाय तथा नौकरियों के लिए तैयार करेगी। लचीले पाठ्यक्रम वाले बहुविषयक पाठ्यक्रम को स्नातक स्तर पर तथा अधिस्नातक स्तर पर भी विषयों रचनात्मक संयोजन होगा। 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यमसे एक नया विकसित भारत का निर्माण किया जा सकेगा।

— प्रोफेसर (डॉ.) हेमलता तलेसरा

श्रावक

श्रावक की तीन श्रेणियां

प्रथम श्रेणी

- 1 नमस्कार महामंत्र का नियमित माला जाप
- 2 प्रतिदिन नवकारसी तप की साधना
- 3 अनन्तकाय (जमीकंद) का परित्याग
- 4 मद्य-मांस का परिहार

मध्यम श्रेणी

- 1 सामान्य कुलाचार व सदाचार के नियमों का पालन
- 2 बारह व्रतों की अखण्ड आराधना
- 3 रात्रि भोजन के त्याग
- 4 स्वाध्याय में कुछ समय लगाना

उत्तम श्रेणी

- 1 सर्वथा सचित का त्याग
- 2 प्रतिदिन एकासन
- 3 पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत की साधना
- 4 रात्रि को चतुर्विध आहार का परित्याग

सच्चे श्रावक की पहचान

- 1 जिसने मैं कौन हूँ इसकी खोज आरम्भ कर दी है
- 2 जो शांत और सहज जीवन जीने का आदी हो

- 3 जो आन्तरिक क्रान्ति के लिए नित्य नये प्रयोग करता रहता हो
- 4 जिसके जीवन में कम से कम उलझनें हैं



चार प्रकार के श्रावक

- 1 माता-पिता तुल्य - माता-पिता समान श्रमण-संघ का सदा हित चिंतन तथा साधु-साध्वियों की निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाला
- 2 भाई तुल्य - आवश्यकता उत्पन्न होने पर आपत्ति काल में संघ सेवा का दायित्व बोध करने वाला
- 3 मित्र तुल्य - प्रीतिवश संघ की सेवा करने वाला
- 4 सौत तुल्य - साधु-संतों की कमियों को सदा देखते रहने वाला

भगवान महावीर के दस प्रमुख श्रावक

- | | | |
|--------------|------------|--------------|
| 1 आनन्द | 2 कामदेव | 3 चूलणीपिता |
| 4 सुरादेव | 5 चुल्लशतक | 6 कुण्डकौलिक |
| 7 शकडालपुत्र | 8 महाशतक | 9 नन्दनिपिता |
| 10 लेयिकपिता | | |

संकलन : बीना तलेसरा

एक सेवा ऐसी भी

एक उम्रदराज औरत ने बड़े सम्मानपूर्वक आवाज दी, “आ जाइए मैडम, आप यहाँ बैठ जाइये” कहते हुए उसे अपनी सीट पर बैठा दिया, खुद वो गरीब सी औरत बस में खड़ी हो गई। मैडम ने दुआ दी, “बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरी बुरी हालत थी सच में”। उस गरीब महिला के चेहरे पर एक सुकून भरी मुस्कान फैल गई।

कुछ देर बाद शिक्षिका के पास वाली सीट खाली हो गई लेकिन महिला ने एक और महिला को, जो एक छोटे बच्चे के साथ यात्रा कर रही थी और मुश्किल से बच्चे को ले जाने में सक्षम थी, को सीट पर बिठा दिया।

अगले पड़ाव पर बच्चे के साथ महिला भी उतर गई, सीट खाली हो गई, लेकिन नेकदिल महिला ने बैठने का लालच नहीं किया, बस में चढ़े एक कमजोर बूढ़े आदमी को बैठा दिया जो अभी-अभी बस में चढ़ा था। सीट फिर से खाली हो गई। बस में अब गिनी-चुनी सवारियां ही रह गई थीं, अब उस अध्यापिका ने महिला को अपने पास बिठाया और पूछा, सीट कितनी बार खाली हुई है लेकिन आप लोगों को ही बैठाते रहीं, खुद नहीं बैठीं, क्या बात है ?

महिला ने कहा, मैडम, मैं एक मजदूर हूँ, मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं कुछ दान कर सकूँ तो मैं क्या करती हूँ कि कहीं रास्ते से पत्थर उठाकर एक तरफ कर देती हूँ, कभी किसी जरूरतमंद को पानी पिला देती हूँ, कभी बस में किसी के लिए सीट छोड़ देती हूँ, फिर जब सामने वाला मुझे दुआएं देता है तो मैं अपनी गरीबी भूल जाती हूँ। दिन भर की थकान दूर हो जाती है और तो और, जब मैं दोपहर में रोटी खाने के लिए बैठती हूँ ना बाहर बेंच पर, तो ये पंछी - चिड़ियां पास आ के बैठ जाते हैं, रोटी डाल देती हूँ छोटे-छोटे टुकड़े करके जब वे खुशी से चिल्लाते हैं तो भगवान के उन जीवों को देखकर मेरा पेट भर जाता है। पैसा धेला न सही, सोचती हूँ दुआएं तो मिल ही जाती है ना मुफ्त में। फायदा ही है ना और हमने लेकर भी क्या जाना है यहां से।

शिक्षिका अवाक रह गई, एक अनपढ़ सी दिखने वाली महिला इतना बड़ा पाठ जो पढ़ा गई थी उस।

अगर दुनिया के अंधेले गेगें सीसों के अनालें तो धरती स्वर्ग बन जाएगी।

दान सिर्फ धन से नहीं, मन से भी होता है।

सम्मान

श्रीमती प्रणिता तलेसरा को अन्तराष्ट्रीय समरसता मंच की ओर से दिल्ली में आयोजित भारत नेपाल संस्कृत सम्मेलन में इन्दिरा गांधी समरसता अवार्ड व जी वी कृष्णमूर्ति अवार्ड से सम्मानित किया गया।

श्रद्धा सुमन

विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है उन सभी को जो वर्ष 2023 मार्च से 2024 जुलाई के मध्य हमारा साथ छोड़ गये :-

- | | |
|--------------------------------------|----------|
| 1. श्री सोहन लाल जी तलेसरा..... | 09.12.23 |
| 2. श्रीमति शान्ता जी तलेसरा..... | 17.02.24 |
| 3. श्री हनुमन्त कुमार जी तलेसरा..... | 17.02.24 |

Printed Matter - Book Post

सेवामें,
श्रीमती/श्रीमान् _____

प्रेषक :

तलेसरा विकास संस्थान, उदयपुर

98, बड़ा बाजार, चौमुख मन्दिर के पास,
उदयपुर-313001 (राज.)

मो. 94141-57957 (अध्यक्ष)

मो. 94604-21847 (सचिव)